RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-06
June-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

सांख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त परिभाषिक शब्दों के लिये ऑनलाइन सूचना निष्कर्षण तन्त्र

[1]अन्जू, [*2]चन्द्र, सुभाष

[1] *पीएच.डी. (शोधार्थी), संस्कृत विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत*

[*2] *सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत*

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 12 June 2019

Keywords
दर्शन परिभाषाकोश, परिभाषाकोश, सांख्य-योग दर्शन, सांख्यकोश, योगकोश आदि ।

[*]Corresponding Author
Email: subhash.jnu[at]gmail.com

ABSTRACT

संस्कृत जगत में प्रारम्भ से ही पारिभाषिक शब्दों के निर्माण और उपयोग का प्रचलन रहा है । ज्ञान की किसी विशेष विधा (कार्य क्षेत्र) में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों की उनकी परिभाषा सहित सूची पारिभाषिक शब्दावली (glossary) या परिभाषाकोश कहलाती है । पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग जटिल तथ्यों की अभिव्यक्ति को सहज एवं सुगम बनाने के लिये किया जाता है । जिससे किसी भी शास्त्र को सरलतापूर्वक समझा जा सकता है । संस्कृत में कोश परम्परा के अन्तर्गत सर्वप्रथम शब्दावली के रूप में निघंटु प्राप्त होता है । जिसमें वैदिक शब्दों का संग्रह किया गया है । इस प्रकार के परिभाषाकोश किसी भी ग्रन्थ या शास्त्र को समझने में सहायक होते हैं । भारतीय दर्शन भी विभिन्न प्रकार के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करता है । जिसका तात्पर्य दर्शन शास्त्र के किसी विशिष्ट अवधारणा को स्थापित करना होता है । परन्तु सामान्य रूप से वही शब्द किसी अन्य अर्थ को बताता है । भारतीय दर्शन से सम्बन्धित मुद्रित रूप में अनेक पारिभाषिक कोश उपलब्ध हैं । सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में प्रत्येक व्यक्ति कम समय में ऑनलाइन सूचनाएं प्राप्त करना चाहता है । इसी उद्देश्य से सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिये ऑनलाइन सूचना तंत्र विकास किया जा रहा है । जिसके माध्यम से इस प्रकार की ज्ञानार्जन सामग्री इंटरनेट के माध्यम से बस एक ही क्लिक में उपलब्ध हो सकती है । इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य इस सिस्टम का प्रदर्शन करना है । जिससे कम्प्यूटर एवं ई-लर्निंग के इस वर्तमान परिवेश में संस्कृत के छात्र एवं शिक्षक तथा संस्कृत से इतर लोग भी सरलता पूर्वक सांख्य-योग दर्शन को समझने में समर्थ हो सकें । यह ऑनलाइन सर्च सिस्टम संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर उपलब्ध है । यह सिस्टम अभी विकासाधीन है। अभी तक इस सिस्टम में कुल 50 पारिभाषिक शब्द शामिल हैं । यह सिस्टम मुद्रित एवं ऑनलाइन रूप में उपलब्ध सभी पारिभाषिक कोशों से बिल्कुल भिन्न है । क्योंकि इस सिस्टम द्वारा प्रदत्त पारिभाषिक शब्दों से सम्बन्धित सूचनाएं विस्तार में होती हैं साथ ही साथ प्रत्येक शब्दों के विभिन्न अर्थों की भी सूचनाएं विश्लेषण के रूप में प्राप्त होती हैं ।

1. पृष्ठभूमि (Background)

प्रत्येक शब्द का विभिन्न विषयों में अलग-अलग अर्थ होता है । कभी कभी तो किसी विशिष्ट शब्द का प्रयोग किसी अवधारणा के लिये किया जाता है । जिसको समझने लिये अनेक वाक्यों या पूरा-पूरा पैराग्राफ की अवश्यकता पड़ती है । जिन्हें परिभाषाओं का निर्माण किया जाता है । बिना इन परिभाषाओं के ज्ञान के उस विषय को नहीं समझा जा सकता है । अतः किसी भी विषय को की पारिभाषिक शब्दावली का बड़ा ही महत्त्व है। सहज भाषा (Natural Language) की तुलना में किसी वैज्ञानिक, तकनीकी या आर्थिक विषय के वर्णन में यह विशेषता होती है कि उसमें संज्ञाओं (नाम) की भरमार होती है। किसी विशिष्ट विषय (Specialized Subject) को समझने-समझाने का काम पारिभाषिक शब्दावली के बिना कठिन ही नहीं, असम्भव भी हो जाता है । पारिभाषिक शब्दों के माध्यम से विचार-विनिमय आसान होने के साथ ही साथ है विचार-विनिमय दक्षतापूर्वक हो पाता है। दर्शन एक विशाल एवं गूढ विषय है । इसको समझने के लिये इससे सम्बन्धित परिभाषाओं का ज्ञान होना अवश्यक है । भारतीय दर्शन के अनेक शाखाएं हैं जिनमें एक शब्द अलग-अलग शाखाओं में अलग-अलग अवधारणा को समाहित करता है । अतः इनका ज्ञान होना अत्यावश्यक होता है ।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मनुष्य विचारवान् रहा है । वह सदैव सत्य के अन्वेषण में व्यस्त रहता है । हम कौन हैं? कहाँ से आये हैं? जीवन का लक्ष्य क्या है? आदि इस प्रकार के प्रश्न मस्तिष्क में विद्यमान रहे हैं । कालान्तर से इन विचारों की विशाल परम्परा दर्शन रूप में प्रकट हुई । जिसमें प्रत्येक दर्शन के सिद्धान्त तत्त्व भिन्न हैं किन्तु इन सभी भारतीय दर्शनों का एक ही मूल उद्देश्य रहा है मनुष्य जीवन का उद्धार करना । ये सभी दर्शन मूल रूप से सूत्र शैली में निबद्ध है । इन सूत्रों के अर्थों को स्पष्ट करने की दृष्टि से अनेक प्रकरण ग्रन्थों का निर्माण हुआ जिसके फलस्वरूप अनेक क्लिष्ट शब्दों का समावेश होता चला गया । अब इन शब्दों के ज्ञान के बिना सभी दर्शनों को समझना कठिन सा हो गया । इस समस्या को भी दूर करने के लिये अनेक विद्वानों ने लगभग सभी भारतीय दर्शनों के लिये परिभाषाकोश एवं शब्दकोशों का निर्माण किया । ज्ञान की किसी विशेष विधा (कार्य क्षेत्र) में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों की उनकी परिभाषा सहित सूची पारिभाषिक शब्दावली (glossary) या पारिभाषाकोश कहलाती है । पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग जटिल

RRIJM 2015, All Rights Reserved

तथ्यों की अभिव्यक्ति को सहज एवं सुगम बनाने के लिये किया जाता है । इन पारिभाषिक शब्दों के ज्ञान के बिना सम्बन्धित दर्शन को समझना कठिन हो जाता है । भारत में आधुनिक पद्धति पर बने संस्कृत कोशों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। इनमें एक विधा वह है जिसमें अंग्रेजी अथवा जर्मन आदि भाषाओं के माध्यम से संस्कृत के कोशग्रन्थों का निर्माण हुआ। इस पद्धति के प्रवर्तक अथवा आदि निर्माता पाश्चात्य विद्वान् थे। दूसरे नवीन पद्धति के अनुसार नूतन प्रेरणाओं को लेकर संस्कृत में ऐसे कोश बने जिसका माध्यम भी संस्कृत ही था। इस प्रकार के कोशों में विशेष रूप से वाचस्पत्यम् (तारानाथ, 1812-85), शब्दकल्पद्रुमः (वसु, 1967), कविकल्पद्रुमः, अमरकोशः (बालशास्त्री, 2012) आदि मुख्य कोशग्रन्थ की श्रेणी में आते हैं।

इसी संदर्भ में सांख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के लिए कोश का निर्माण किया जा रहा है। यह कोश मुद्रित रूप में तथा ऑनलाइन भी उपलब्ध होगा। आज के इस नवीनयुग में जीवन के लगभग प्रत्येक कार्य इन्टरनेट पर ही निर्भर है । बात ज्ञान प्राप्त करने की हो या दैनिक जीवन में उपयोग सम्बन्धि कार्यों जैसे- गूगल मैप द्वारा किसी भी स्थान पर अन्य व्यक्ति की सहायता बिना जाया जा सकता है। किसी वस्तु विशेष के इतिहास विशेष की जानकारी आदि प्राप्त करनी हो, दोनों ही परिस्थिति में लोग इन्टरनेट का अधिक प्रयोग करना पसन्द करते हैं। प्रत्येक मानव कम समय में अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसे में यदि किसी छात्र या शिक्षक को सांख्य-योग दर्शन को जानना हो तो इसके पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान ऑनलाइन कभी भी कहीं भी प्राप्त कर सकता है। भारतीय दर्शनों का एक ही लक्ष्य निर्धारित है अज्ञान से मानव को मुक्त कर उसे ज्ञान तथा मोक्ष प्राप्त करवाना है। समस्त दर्शनों का उत्पत्ति स्थल वेद ही है परन्तु फिर भी समस्त भारतीय दार्शनिक परम्परा को आस्तिक एवं नास्तिक के रूप में दो भागों में विभक्त किया गया है (उपाध्याय, 1979)। आस्तिक दर्शन परम्परा के दर्शन वेदों को प्रामाणिक रूप में स्वीकार करते हैं जबकि नास्तिक दर्शन वेदों का प्रामाण्य स्वीकार नहीं करते। आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों के वर्गीकरण को चित्र संख्या - 1 से समझा जा सकता है-

Figure 1: दर्शन वर्गीकरण

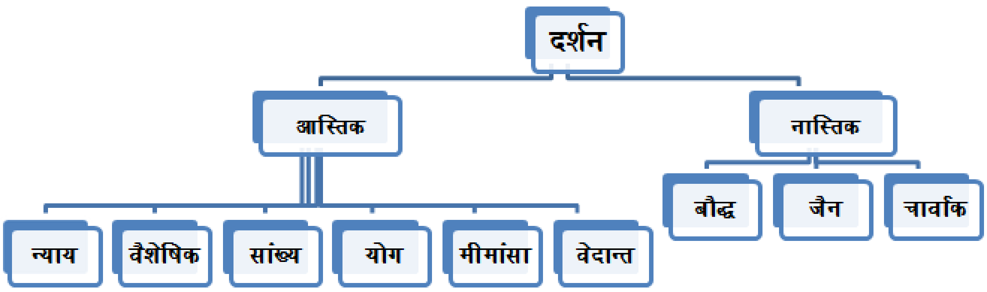

हिन्दू दार्शनिक परम्परा में विभिन्न प्रकार के आस्तिक दर्शनों के अलावा अनीश्वरवादी और भौतिकवादी दार्शनिक परम्पराएँ भी विद्यमान रहीं हैं। दर्शनों में षड्दर्शन अधिक प्रसिद्ध और प्राचीन हैं। षडदर्शनों को 'आस्तिक दर्शन' कहा जाता है । वे वेद की सत्ता को मानते हैं । आस्तिक दर्शन को विचारों की दृष्टि से दो भागो में विभक्त किया जा सकता है, प्रथमतः जो साक्षात् वेदों को ही अपना आधार बनाते हैं। जैसे- मीमांसा दर्शन वैदिक कर्मकाण्ड और वेदान्त दर्शन वैदिक ज्ञानकाण्ड पर आधारित है । द्वितीय जो वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करते हुये नये विचारों को भी सम्मिलित करते हैं वे दर्शन है – सांख्य, योग, न्याय एवं वैशेषिक। नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत आने वाले दर्शनों की विचारधारा के अनुसार दो भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम चार्वाक; जो कि नास्तिक दर्शन में अग्रणी हैं। ये वेदों और उनके अनुयायियों की घोर निन्दा करते हैं। दूसरे बौद्ध और जैन दर्शन; जो संयत रूप से वेदों के मतों से अस्वीकृति व्यक्त करते हैं (उपाध्याय, 1984)।

2. उद्देश्य (Objectives)

इस शोधपत्र का उद्देश्य सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिये ऑनलाइन सूचना तंत्र का निर्माण करना है । जिसकी सहायता से कोई भी जिज्ञासु इन पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान प्राप्त करके सम्बंधित दर्शनों में प्रवेश कर सकता है । इस सिस्टम के माध्यम से अन्य दार्शनिक ग्रन्थों के लिये भी ऑनलाइन सूचना तंत्र का निर्माण करने में सहायता मिल सकती है।

3. सांख्य-योग ई-कोश की उपयोगिता (Utility of Samkhya-yoga E-Glossary)

विश्व अनेक प्रकार के कोशों का भण्डार है । अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न कोशों का निर्माण हुआ है। उपर्युक्त सभी कोशग्रन्थ मुद्रित रूप में प्राप्त होते हैं। किन्तु प्रस्तुत सांख्य-योग कोश मुद्रित तथा ऑनलाइन दोनों रूपो में विकसित किया जा रहा है। जो लोग इन्टरनेट का प्रयोग नहीं कर पाते तथा कुछ इन्टरनेट के माध्यम से

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पढना चाहते हैं इन दोनों पक्षो को ध्यान में रखकर इस कोश का निर्माण किया जा रहा है। इसके साथ-साथ विषय वस्तु की दृष्टि से भी यह अन्य कोशग्रंथो से भिन्न है। क्योंकि इस सिस्टम द्वारा प्रदत्त पारिभाषिक शब्दों से सम्बन्धित सूचनाएं विस्तार से है साथ ही साथ प्रत्येक शब्दों के विभिन्न प्रकरण ग्रन्थों में प्राप्त लक्षण सहित विश्लेषण किया गया है। अब तक प्रस्तुत सिस्टम में कुल 50 शब्दों का के विकास का कार्य पूरा हो चुका है। यह ऑनलाइन तन्त्र है जिसकी सहायता से कम समय में अधिक ज्ञान ग्रहण करने में सहायता मिलती है।

Figure 2: यूजर इन्टरफेस

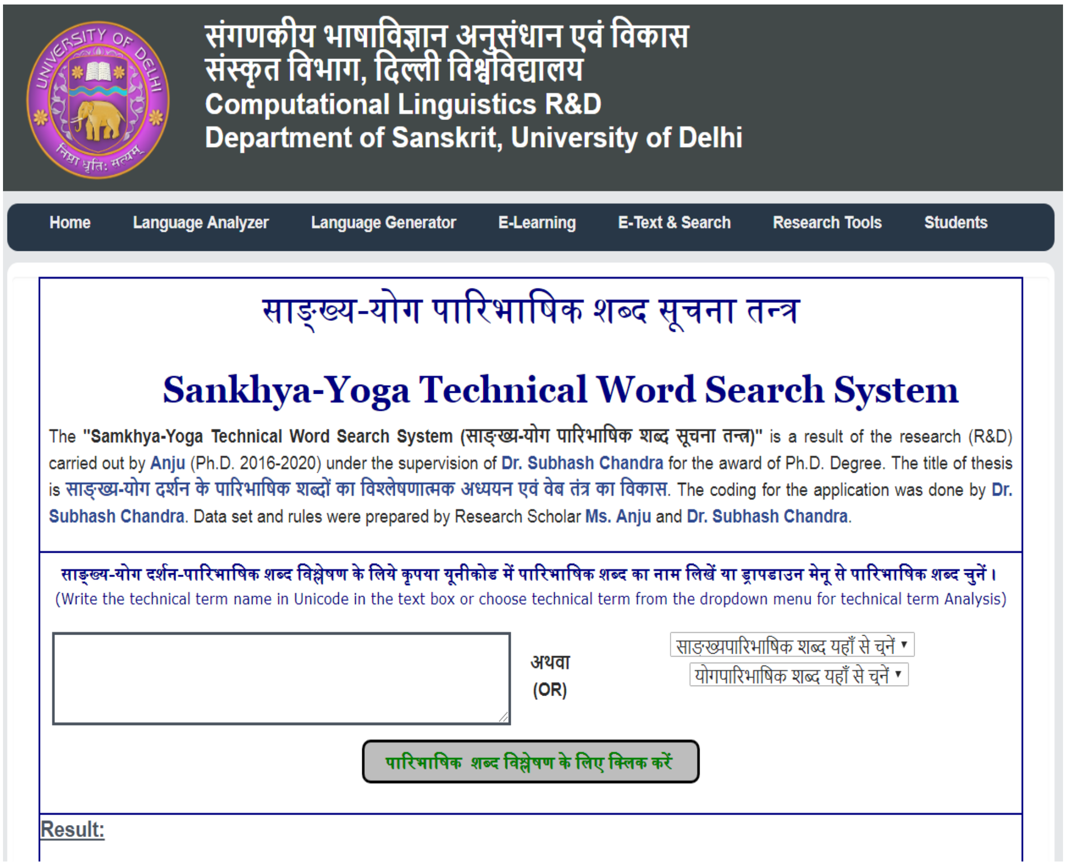

4. शोधसर्वेक्षण (Literature Review)

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र का विकास दुनिया भर में बडी तीव्रता से विस्तृत हो रहा है। पारंपरिक शिक्षण प्रौद्योगिकी के युग में भी हर कोई स्मार्ट फोन पर भी इंटरनेट के माध्यम से तत्काल जानकारी चाहता है। संस्कृत भाषा से संबंधित सङ्गणकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र में, कई संस्थान इस प्रकार के निर्माण के लिए कार्यरत हैं। जिनमें से जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (सीडैक), हैदराबाद विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय मुख्य संस्थान शोध और विकास कर रहे हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (IIT)[1] भी संस्कृत सम्बन्धी कार्यों में अपनी रूचि को प्रदर्शित करने के लिये एक वेबसाइट का निर्माण किया है। कुछ सैद्धान्तिक कार्य के रूप में संस्कृत-हिन्दी कोश (आप्टे, 2009), योगसूत्रभाष्यकोषः (दास, 2009), न्यायोक्तिकोशः, (मिश्र, 1978) तथा बृहदारण्यकोपनिषद् के पारिभाषिक श्ब्दों के अध्ययन हेतु एक लघुशोध प्राप्त होता है "बृहदारण्यकोपनिषद् शाङ्करभाष्य में अद्वैत सम्मत पारिभाषिक शब्दों का अध्ययन" (झा, 1997) आदि अन्य कार्य भी प्राप्त होते हैं। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा अनेक कार्य किये गये है और यह प्रक्रिया निरन्तर उन्नति पर है जिनमें से कुछ कार्य है- मंख-कोश (कुमार, 2009), हलायुध कोश (पाण्डेय एवं अन्य, 2009), Medinikosh (Dwivedy, 2009), Dictionary of sankhya, yoga & Vedanta (Jain, 2007), तथा एक लघुशोध के रूप में "ऑनलाइन पातञ्जलयोगानुक्रमणिका : प्रविधि एवं कठिनाइयाँ" (यादव, 2018) प्राप्त होता है। संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय ने भी संस्कृत भाषा के तकनीक विकास के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। इनके विभिन्न सङ्गणकीय तन्त्रों में से ऋग्वैदिक सर्च (Kumar, 2016), पौराणिक

[1] Welcome to Gita Supersite!

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सर्च (Chandra & Anju, 2017) आदि दो कार्य तत्काल खोज से सम्बन्धित है। श्री वेणीधर जोशी एवं हरिनारायण जोशी ने सन् 1986 में दो कण्डों में आयुर्वेदीय महाकोश संकलित किया। यह संस्कृत का मेडिकल शब्दकोश है। आधुनिक कोशकला (lexicography) के आधार पर वामन शिवराम आप्टे ने सन् 1889 में The Practical Sanskrit-English Dictionary नाम से एक शब्दकोश संकलित किया। जिसका सम्पादित पुनः संस्करण 2014 में प्राप्त होता है।

Table 1: पारिभाषिक शब्द डेटाबेस का प्रारूप

क्र.स.	योग दर्शन	सांख्य दर्शन
1	अक्रमः	बुद्धिः
2	अविरतिः	अशक्ति
3	चित्तम्	अविवेकः
4	विक्षिप्तम्	पुरुषार्थत्वम्
5	निरुद्धम्	अधिकारि

5. सामग्री एवं शोध प्रविधि (Material & Methods)

अभी तक इस सिस्टम में कुल 50 पारिभाषिक शब्द शामिल हैं। यह सिस्टम मुद्रित एवं ऑनलाइन रूप में उपलब्ध सभी पारिभाषिक कोशो से बिल्कुल भिन्न है। क्योंकि इस सिस्टम द्वारा प्रदत्त पारिभाषिक शब्दों से सम्बन्धित सूचनाएं विस्तार में प्राप्त होती हैं। साथ ही साथ प्रत्येक शब्दों के विभिन्न अर्थों की भी सूचनाएं विश्लेषण के रूप में प्राप्त होती है। सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिये ऑनलाइन सूचना तंत्र हेतु सामग्री एकत्रित करने के लिये मुख्य रूप से सांख्यसूत्र (मुसलगाँवकर, 2013), सांख्यकारिका (शास्त्री, 2004) तथा योगसूत्र (श्रीवास्तव, 2011) और इनके साथ साथ सांख्यप्रवचनभाष्य, व्यासभाष्य, भोजवृत्ति, तत्त्ववैशारदी एवं योगवार्त्तिक को आधार बनाकर पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया है। निम्नलिखित चरणों का प्रयोग करके ही सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिये ऑनलाइन सूचना तंत्र के लिये सामग्री संकलन हुआ हैं –

- मूल तथा प्रकरण ग्रन्थों को मुख्य रूप से आधार बनाकर यह शोध किया जा रहा है जिनमें से सांख्य दर्शन के 100 तथा योग के 295 पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया जा चुका है।
- पारिभाषिक शब्दों का एक डेटाबेस तैयार किया गया है।
- तीन अलग-अलग Text files में पारिभाषिक शब्द, लक्षण, विश्लेषण को डेटा को देवनागरी यूनीकोड UTF-8 में संग्रहित किया गया है। जिसका प्रारूप तालिका संख्या 1, 2 एवं 3 में देखा जा सकता है।

Figure 3: शोध प्रविधि

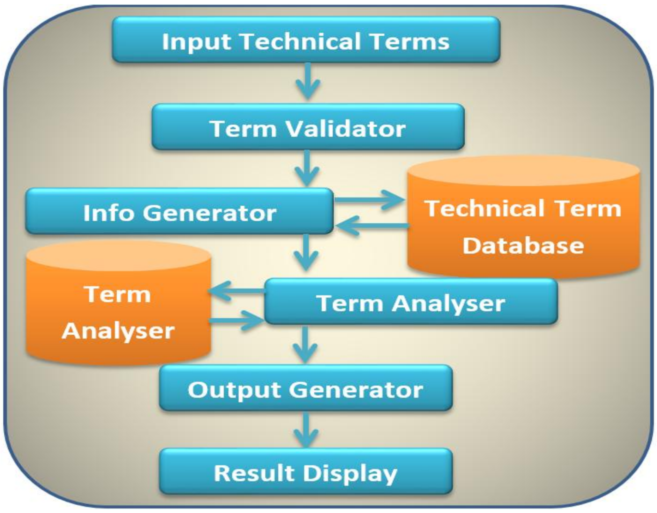

प्रस्तुत सिस्टम सर्वप्रथम प्रदत्त इन्पुट को टर्म वैलिडेटर (Term Validator) घटक को भेजता है। यह घटक टर्म को प्रमाणिक करता है। अगर इन्पुट सांख्य-योग डेटाबेस में प्राप्त होता है तो अगले घटक इन्फो जनरेटर (Info Generator) को भेजता है। अन्यथा यूजर इन्टरफेस पर "यह सांख्य-योग का पारिभाषिक शब्द नहीं है" टैग के साथ सन्देश प्रदर्शित करता है। इन्फो जनरेटर बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटक है। यह तकनीकी टर्म डेटाबेस की सहायता से (Technical Term Database) की सहायता से प्रदत्त इन्पुट से सम्बन्धित सूचनाओं को विकसित करता है। तकनीकी टर्म डेटाबेस का प्रारूप तालिका संख्या 2 में दी गई है। इसके बाद टर्म विश्लेषक (Term Analyzer) घटक को भेजता है। टर्म विश्लेषक घटक टर्म विश्लेषक डेटाबेस (Term Analysis Database) की सहायता से प्रदत्त टर्म का विश्लेषण विकसित करता है। टर्म विश्लेषक डेटाबेस के डेटा का प्रारूप तालिका संख्या 3 में प्रस्तुत की गई है। फिर ऑउटपुट जनरेटर (Output Generator) को भेजता है। यह घटक सीएसएस (CSS) एवं जावास्क्रिप्ट (Java Script) की सहायता से ऑउटपुट जनरेट करके परिणाम डिस्प्ले (Result Display) को भेजता है। यह घटक परिणाम वेबपेज पर प्रदर्शित कर देता है।

Table 2: पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण डेटाबेस का प्रारूप

क्र.स.	विश्लेषण
1	'नि+रुध धातु+ घञ् प्रत्यय से निरुद्ध शब्द का निर्माण होता है जिसका शाब्दिक अर्थ रोकना या निग्रह करना....
2	चित्त की विषयों के भोगरूपी लालसा (गर्ध) 'अविरति' है। यह नौ प्रकार के चित्तविक्षेपक विघ्नों में से छठा विघ्न है.....
3	चित्त से तात्पर्य अन्तःकरण माना जाता है। प्रायः अन्तःकरण एक ही है किन्तु वृत्ति भेद से इसके चार विभाग किये गये है। ..

RRIJM 2015, All Rights Reserved

4	कपिलमुनि ने पुरुषार्थ और अत्यन्तपुरुषार्थ को भिन्नतया ग्रहण किया है ....
5	किसी भी ग्रन्थ को पढने का एक अधिकारी होता है। वेदान्तसार में भी कहा गया है .....

Table 3: सांख्य-योग पारिभाषिक शब्दों की जानकारी के डेटाबेस का प्रारूप

क्र.स.	पारिभाषिक शब्द	लक्षणसूत्र
1	अक्रमः	तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयमक्रमं चेति विवेकजं ज्ञानम्
2	अविरतिः	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्धभूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास् तेऽन्तरा..
3	चित्तम्	योगश् चित्तवृत्तिनिरोधः
4	पुरुषार्थत्वम्	प्रात्यहिकक्षुत्प्रतीकारवत्तत्प्रतीकारचेष्टनात्पुरुषार्थत्व
5	अधिकारि	अधिकारित्र्यैविध्यान्न नियमः, अधिकारिप्रभेदान्न नियमः, अधिकारित्रैविध्यान्न नियमः

6. परिणाम एवं परिचर्चा (Result & Discussions)

यह एक ई-कोश एवं ऑनलाइन खोज तंत्र है जो सांख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का परिणाम स्वरूप विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह ऑनलाइन खोज तन्त्र संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर उपलब्ध है। यह सिस्टम एक यूजर इन्टरफेस के माध्यम से इन्पुट स्वीकार करता है तथा इसी पर परिणाम प्रस्तुत करता है। इसका प्रारूप Figure 2 से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस इन्टरफेस में एक टेक्स्ट बॉक्स है, जिसमें यूजर दो प्रकार से इन्पुट प्रदान कर सकता है। प्रथम सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्द को देवनागरी (UTF-8) में टाइप करके एवं दूसरा ड्रॉपडाउन मेन्यू से पारिभाषिक शब्द का चुनाव करके। तदुपरान्त टेक्स्टबॉक्स के नीचे वाले बटन (पारिभाषिक शब्द विश्लेषण के लिये क्लिक करें) पर क्लिक करते ही परिणाम प्रदर्शित हो जाता है। परिणाम का प्रारूप Figure 4 में दिखाया गया है। यह चरण उनके लिये हितकर है जिन्हें सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के बारे में पता ही नहीं है। परिणाम रूप में पारिभाषिक शब्द, उसका लक्षण विभिन्न ग्रन्थों के अनुसार एवं सम्पूर्ण विश्लेषण व्याख्या सहित प्रदर्शित होते हैं। इस सिस्टम के फलस्वरूप कोई भी व्यक्ति कभी भी और कहीं भी इस ज्ञान का लाभ उठा सकता है क्योंकि यह तन्त्र विभागीय वेबसाइट पर 24*7

ऑनलाइन उपलब्ध है। इस तन्त्र के माध्यम से अगर कोई पारिभाषिक शब्द खोजना चाहता है तो उसे उस शब्द का अर्थ, सम्बन्धित दर्शन, लक्षण तथा सम्पूर्ण विश्लेषण प्राप्त कर सकता है। परिणाम के रूप में प्राप्त पारिभाषिक शब्द की सूचनाओं में जैसाकि चित्र संख्या 4 में प्रदर्शित है निम्न बिन्दु संयुक्त है-

1. **पारिभाषिक शब्द:** इसके अन्तर्गत खोजे गये सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्द को संकलित किया हुआ है।
2. **पारिभाषिक शब्दलक्षण:** परिणाम में प्रदर्शित लक्षण नामक बिन्दु के अन्तर्गत मूल तथा प्रकरण ग्रन्थों (योगसूत्र, व्यासभाष्य, भोजवृत्ति, तत्त्ववैशारदी, तथा योगवार्तिक) के अनुसार योग के प्रत्येक शब्द के लक्षण दिये गये हैं। सांख्य दर्शन के पारिभाषिक शब्द के लक्षण सांख्यसूत्र, सांख्य-प्रवचनभाष्य तथा सांख्यकारिका के अनुसार रखे गये हैं। साथ ही साथ
3. **पारिभाषिक लक्षणार्थ:** सिस्टम द्वारा प्रदत्त प्रत्येक लक्षण इनके अर्थ के साथ हाइपरलिंक्ड किये गये हैं। किसी भी लक्षण पर कर्सर ले जाने के बाद उसका हिन्दी अनुवाद प्रदर्शित हो जाता है।
4. **पारिभाषिक लक्षणव्याख्या:** सिस्टम द्वारा प्रदत्त प्रत्येक लक्षण इनके अर्थ के साथ ओवरमाउस प्रकार्य के द्वारा हाइपरलिंक्ड किये गये हैं। किसी भी लक्षण पर कर्सर ले जाने के बाद उसका हिन्दी अनुवाद प्रदर्शित हो जाता है तथा उस पर क्लिक करने से नई विंडो में उस लक्ष्षण की व्याख्या प्रदर्शित होती है।
5. **पारिभाषिक विश्लेषण:** विश्लेषण में प्रदत्त पद का प्रयोग एवं सामान्य शास्त्र में इसके अनेक अर्थों पर चर्चा की जाती है। साथ ही साथ इसकी सम्पूर्ण व्याख्या की जाती है। जिसमें किस भाष्यकार ने उस शब्द विशेष के बारे में क्या कहा है और साथ ही साथ अन्य दर्शन में भी यह शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है इत्यादि सूचनाएं शामिल हैं।

इस सिस्टम को उपयोगकर्ता के लिये बहुत ही सहायक बनाया गया है। जिससे इसका उपयोग करना बहुत ही सरल हो गया है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

Figure 4: परिणाम

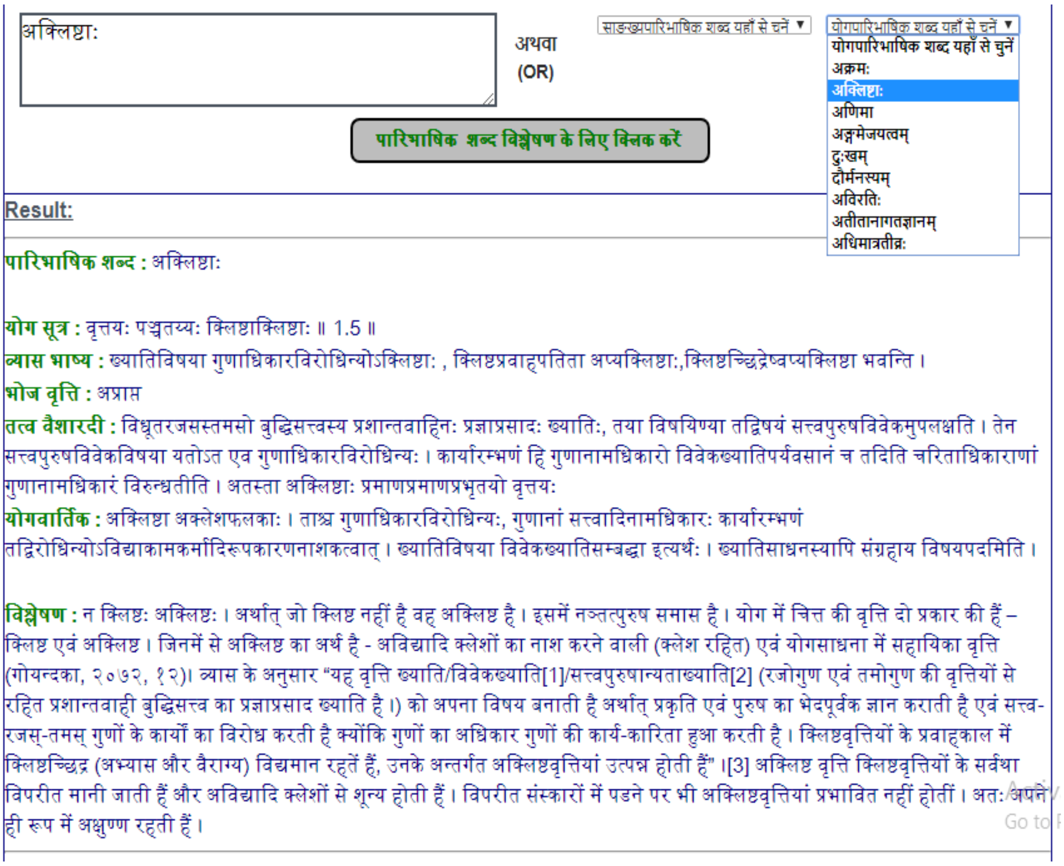

7. शोध की भावी सम्भावना (Future Directions)

अभी इस प्रणाली का निर्माण केवल सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के ई-कोश एवं ऑनलाइन खोज तंत्र के लिये हुआ है । जो देवनागरी लिपि में उपयोगकर्ता द्वारा लिखने पर परिणाम भी देवनागरी लिपि में देता है । इस प्रणाली के माध्यम से अन्य दर्शन के लिये इस प्रकार का सिस्टम बनाया जा सकता है और साथ ही साथ अन्य भाषाओं में भी इसका निर्माण किया जा सकता है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची (References)

1. Apte, V. S, 2014, *The practical Sanskrit-English dictionary*, Motilal Banarsidass, Delhi.
2. Chandra, Subhash and Anju, 2017, *Puranic Search: An Instant Search System for Purana*. Language in India, ISSN 1930-2940, Volume 17:5.
3. Dwivedy, Praveen Kumar, 2009, *medinikosh*. J.N.U., Delhi.
4. *Gita Supersite, yogadarshanam*, Retrieved February 07, 2019, from http://www.gitasupersite.iitk.ac.in
5. Jain, Sapna, 2007, *Dictionary of Sankhya, Yoga & Vedanta*, JNU, New Delhi.
6. आप्टे, वामन शिवराम, 2009, *संस्कृत-हिन्दी कोश,* चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी ।
7. कुमार, अरविन्द, 2009, *मंख-कोश,* विशिष्टसंस्कृताध्ययनकेन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ।
8. झा, संजय कुमार, 1997, *बृहदारण्यकोपनिषद् शाङ्कीकर भाष्य में अद्वैत सम्मत पारिभाषिक शब्दों का अध्ययन,* एमफिल लघुशोधप्रबन्ध, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
9. तारानाथ, तर्कवाचस्पति, 1812-1885, *वाचस्पत्यम्,* काव्यप्रकाश प्रेस, कलकत्ता ।
10. दास, भगवान, 2009, *योगसूत्रभाष्यकोष:,* भारतीय विद्या संस्थान।

11. पाण्डेय, रजनीश कुमार और अन्य, 2009, *हलायुध कोश,* विशिष्टसंस्कृताध्ययनकेन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
12. बालशास्त्री (सम्पा.), 2012, *अमरकोशः,* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
13. मिश्र, छविनाथ, 1978, *न्यायोक्तिकोशः,* अजन्ता पब्लिकेशन्स (इण्डिया)।
14. मुसलगाँवकर, गजाननशास्त्री, 2013, *सांख्यदर्शनम्,* चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
15. यादव,अखिलेश कुमार, 2018, *ऑनलाइन पातञ्जलयोगानुक्रमणिका: प्रविधि एवं कठिनाइयाँ (प्रतिनिधि ग्रन्थों के विशेष संदर्भ में)*, एमफिल लघुशोधप्रबन्ध, विशिष्टसंस्कृताध्ययनकेन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
16. वसु, वरदाप्रसाद एवं वसु, हरिचरण (सम्पा.), 1967, *शब्दकल्पद्रुम,* चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी।
17. शास्त्री, राकेश, 2004, सांख्यकारिका, संस्कृत ग्रन्थासार, दिल्ली।
18. श्रीवास्तव, सुरेशचन्द्र, 2011, *पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्य-संवलितम् तच्च योगसिद्धि-हिन्दीव्याख्योपेतम्),* चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
19. उपाध्याय, बलदेव, संवत् 1979, *भारतीय दर्शन,* चौखम्बा ओरयन्टालिया, वाराणसी।
20. उपाध्याय, बलदेव, 1984, *भारतीय दर्शन (प्रथम खण्ड),* चौखम्बा ओरियण्टालिया, वाराणसी।